Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 4 | APRIL 2024

वैश्विक मार्गदर्शक के रूप में भारतीय संस्कृति :- एक विश्लेषण

विरेंद्र सिंह यादव [1]

[1] **सहायक आचार्य, इतिहास, चौधरी बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर**

ABSTRACT:

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृतियों में एक है। जीने की कला हो, विज्ञान हो, या राजनीति का क्षेत्र, भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति भारत राष्ट्र की एक विरासत है। भारतीय संस्कृति में धर्म, अध्यात्मवाद, ललित कलाएं, ज्ञान विज्ञान, विविध विधाएँ, नीति, विधि विधान, जीवन प्रणालियों और वे समस्त क्रियाएं और कार्य है जो उसे विशिष्ट बनाते हैं और जिन्होंने भारतीयों के सामाजिक और राजनीतिक विचारों को, धार्मिक और आर्थिक जीवन को, साहित्य, शिष्टाचार और नैतिकता को ढाला है। भारतीय संस्कृति का भी विकासक्रम रहा है, उसमें भी विविध संस्कृतियों को संघर्ष, मिलन और संपर्क से परिवर्तन, परिवर्द्धन और आदान-प्रदान होता रहा है, विविध श्रेष्ठ सांस्कृतिक तत्वों का संग्रह होता रहा है। भारतीय संस्कृति में मानवता, अद्वेषभाव, करुणा, मैत्री सामजस्य एवं समय के अनुरूप परिवर्तनशीलता आदि शाश्वत तत्व निहित है। संस्कृति के निर्माण को अनवरत, क्रमबद्ध एवं निरंतर प्रवाहशील कहा जा सकता है। भारतीय संस्कृति की आधारशिला अध्यात्मवाद है। आध्यात्मिकता भारतीय मस्तिष्क को समझने की कुंजी है। आध्यात्मिकता में सांस्कृतिक एकता के चिन्ह स्पष्ट होते हैं। भारत की सांस्कृतिक विशेषता में उसकी उदार ग्रहणशीलता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्राचीन भारत में जितनी भी विदेशी जातियाँ आई वे भारतीय रंग में रंग गई। फल स्वरुप विभिन्न भाषाओं, रीति रिवाजों एवं परंपराओं का जन्म हुआ परंतु भारत की संस्कृति की एकता यथावत बनी रही। अतः भारतीय संस्कृति भारत की आत्मा है।

KEYWORDS:

संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, सुधार, परिष्कार, सजावट, शुद्धी, जाति, समुदाय, चिंतन, विचारधारा, भौतिकता, आंतकवाद, उग्रवाद, रूस – यूक्रेन, इजराइल – फिलिस्तीन, तालिबान, नशा, महिला अत्याचार, वसुदेव कुटुंबकम, सामजस्य, समन्वय, एकरूपता, मानवता, अहिंसा, सत्य, प्रकृति- प्रेम, नारी – सशक्तिकरण, ग्रहणशीलता, अभिवादन, योग, प्राणायाम, अनेकता में एकता आदि।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
29th April 2024	30th April 2024

संस्कृति किसी, जाति या समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्श जीवन मूल्य आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है – संस्कार, सुधार, परिष्कार, सजावट, शुद्ध इत्यादि। संस्कृति का संबंध हमारी सोच, चिंतन यह विचारधारा से है। इसका संबंध किसी जाति अथवा राष्ट्र के मानसिक अथवा बौद्धिक विकास से होता है। कोई जाति अपने विकास के साथ-साथ कुछ विशिष्ट गुणो पर बल देने लगती है। इन गुणो के विकास में काफी समय लगता है तथा इन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कार के रूप में मान्यता प्राप्त होती रहती है। ऐसे संस्कार- जन्य गुण संस्कृति कहलाते हैं जिनके विकास में हजारों वर्ष लग जाते हैं। संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'कल्चर'(culture) शब्द का हिंदी अनुवाद है जिसका शाब्दिक अर्थ उत्तम बनाना है। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार ने इस संबंध में लिखा है "मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो सृजन करता है उसे संस्कृति कहते हैं" रामधारी सिंह दिनकर इस संबंध में लिखते हैं कि "संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में व्याप्त है, यह आत्मिक गुण है जो मनुष्य स्वभाव में इस प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगंध तथा दूध में मक्खन।" वस्तुत मानव के जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहा जाता है। श्री हरिदत्त वेदालंकार ने संस्कृति निर्माण की प्रक्रिया का यह उदाहरण दिया है "संस्कृति की तुलना ऑस्ट्रेलिया के निकट समुद्र में पाई जाने वाली मूंगे की भीमकाय चट्टानों से की जा सकती है। मूंगे के असंख्य कीड़े अपने छोटे घर बनाकर समाप्त हो गए फिर नए कीड़ों ने घर बनाए उनका भी अंत हो गया। इसके बाद उनकी अगली पीढ़ी ने भी यही किया और यह क्रम हजारों वर्षों तक चलता रहा। आज इन सब मांगों के नन्हे नन्हे घरों ने परस्पर जुड़ते हुए विशाल चट्टान का रूप धारण कर लिया है। संस्कृति का भी इसी प्रकार धीरे-धीरे निर्माण होता है। "यह सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक एवं गहन है। परंतु फिर भी सभ्यता एवं संस्कृति परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित होती है। सामान्यतः सभ्यता की तुलना शरीर एवं संस्कृति की तुलना आत्मा से की जाती है तथा दोनों को एक दूसरे के बिना महत्वहीन माना जाता है। सी.ई.एम. जोड़ ने इन दोनों में अंतर बताते हुए लिखा है की "सभ्यता वह है जो हम बनाते हैं जबकि संस्कृति वह है जो हम हैं। "सभ्यता बाहरी व संस्कृति आंतरिक विकास दर्शाती है। सभ्यता मानव जीवन की विकास चर्चा तथा संस्कृति उसके गुणो का परिचय कराती है। संस्कृति को अपनाने में देर लगती है पर सभ्यता का अनुकरण सरलता से किया जा सकता है। संस्कृति का संबंध निश्चय धार्मिक विश्वास से है। सभ्यता सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से बंधी हुई है।

आधुनिक विश्व में भौतिकवादिता की अंधी दौड़ व्याप्त है। हर कोई येन केन प्रकरण आगे बढ़ना चाहता है। बड़े स्तर पर पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण का प्रयास हो रहा है। लेकिन इस अंधी दौड़ में हम सयंम,संतोष, सामजस्य, एकरूपता, आदर, सत्कार, सहयोग जैसी भारतीय संस्कृति की विरासत को भूलते जा रहे हैं। आज वैश्विक स्तर पर कई समस्याएं सुरसा के मुहँ की तरह फैलती जा रही है जिनको नियंत्रण में करने में भारतीय संस्कृति मार्गदर्शन के रूप में दिखाई देती है। आज पूरे वैश्विक स्तर पर आंतकवाद दावानल की तरह फैलता जा रहा है। भारत जैसा सयंमशील देश ही नहीं बल्कि आंतकवाद की फैक्ट्री पाकिस्तान के लिए भी यह आत्मघाती हो रहा है। अमेरिका हो या चीन पूर्व हो या पश्चिम सभी राष्ट्र इस आंतकवाद से त्रस्त है। इसी तरह बड़े स्तर पर आधुनिक समय में बढ़ रही उग्र सोच भी वैश्विक स्तर पर एक गंभीर मुद्दा है। वह चाहे नस्ल के आधार पर हो या रंग के आधार पर, धर्म के आधार पर हो या जाति के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर हो या भाषा के आधार पर सभी जगह पर मानसिक सोच प्रदूषित होते दिखाई दे रही है। अभी हाल ही में ऑस्ट्रेलिया व अमेरिका में घटित हुई हिंसक घटनाएं इस उग्रवादी सोच का ही प्रतिबिंब है। रूस-यूक्रेन युद्ध पिछले लगभग डेढ वर्षों से चल ही रहा है वहीं हमास ने इसराइल पर मिसाइल दागकर इजराइल-फिलिस्तीन समस्या को एक बार पुनः ज्वलंत कर दिया है। अभी हाल ही में ईरान ने भी प्रथम बार इजराइल पर सीधा आक्रमण करते हुए मिसाइलें दागी है तो जवाब में इजरायल ने भी ईरान के परमाणु संयंत्रों पर हमले का दावा किया है। कुल मिलाकर इजराइल-फिलिस्तीन-ईरान एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है व पूरा विश्व एक बड़े युद्ध की आहट सुन रहा है। इधर अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद शरीयत लागू कर दिया गया है जिसके साथ ही महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार व बढ़ता नशा अखबारों की सुर्खियां बना हुआ है। वैश्विक स्तर पर पैदा हुई इन जटिल परिस्थितियों के समाधान में

भारतीय संस्कृति ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि भारतीय संस्कृति अपनी ऐसी विशेषताएं समेटे हुए हैं जो न केवल इन ज्वलंत मुद्दों का समाधान खोज सकती है बल्कि विश्व को एक नई राह दिखा सकती जो सयंम, संतोष, सादगी, समन्वय, एकता एवं सामजस्य के मार्ग पर आधारित होगी।

वसुधैव कुटुंबकम जिसका अर्थ "विश्व एक परिवार है," एक दर्शन है जो वेदों और उपनिषदों सहित प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों से उत्पन्न हुआ है। यह एक अवधारणा है जिसे दुनिया भर के विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोगों ने अपनाया है और यह आज भी दुनिया में एकता और सद्भाव को बढ़ावा देने वाले कई लोगों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बना हुआ है।

इसके मूल में, वसुधैव कुटुंबकम सिखाता है कि सभी जीवित प्राणी परस्पर जुड़े हुए और अन्योन्याश्रित हैं। इसका मतलब यह है कि हम जो भी कार्य करते हैं, चाहे वह कितना भी छोटा या महत्वहीन क्यों न हो, उसका एक व्यापक प्रभाव हो सकता है जो पूरी दुनिया को प्रभावित करता है। यह एक अनुस्मारक है कि हम सभी एक ही वैश्विक समुदाय का हिस्सा हैं और हमारे मतभेदों को समाप्त किया जाना चाहिए। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा इस विचार को बढ़ावा देती है कि सभी जीवित प्राणी एक दूसरे से जुड़े हुए और एक दूसरे पर निर्भर हैं। यह व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्रों के बीच **एकता और सद्भाव** की भावना को बढ़ावा देता है। यह लोगों को समान लक्ष्यों की दिशा में मिलकर काम करने और खुद को एक बड़े वैश्विक समुदाय के हिस्से के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करता है। वसुधैव कुटुंबकम दूसरों के साथ **दया, सहानुभूति और सम्मान** के साथ व्यवहार करने के महत्व पर जोर देता है। यह व्यक्तियों को मतभेदों से परे देखने और उनके सामने आने वाले प्रत्येक व्यक्ति में मानवता को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह करुणा और सहानुभूति की संस्कृति को बढ़ावा देता है जो संघर्ष को कम करने और शांति को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं की समृद्धि को बढ़ावा देता है। यह **विविधता और समावेशिता** के महत्व को पहचानता है और लोगों को एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह रूढ़ियों को तोड़ने और सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन व्यक्तियों और समुदायों को रचनात्मक रूप से सोचने और चुनौतियों का नवीन समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह मानता है कि विविधता और समावेशिता रचनात्मकता के महत्वपूर्ण स्रोत हैं और विविध दृष्टिकोण सफलताओं और नवाचारों को जन्म दे सकते हैं। वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन एक बेहतर दुनिया के लिए एक दृष्टिकोण प्रदान करता है जो करुणा, सहयोग, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, विविधता, समावेशिता, संघर्ष समाधान, पर्यावरणीय प्रबंधन, सामाजिक न्याय, नवाचार और रचनात्मकता के सिद्धांतों पर बनाया गया है। यह प्रेम, दया और सम्मान के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित एक अधिक न्यायसंगत और बेहतर दुनिया बनाने के लिए एक दिशा प्रदान करता है। वसुधैव कुटुंबकम **सामाजिक न्याय और समानता** पर बहुत जोर देता है। यह असमानता और भेदभाव को खत्म करने और एक ऐसी प्रणाली बनाने के महत्व को पहचानता है जो सभी के लिए निष्पक्षता और न्याय को बढ़ावा देती है।

भारतीय संस्कृति की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है **सहिष्णुता और समन्वयशीलता** जो भटके हुए विश्व को एक नई राह दिखा सकती है। भारतीयों को धर्म ने यह सिखाया है कि बाह्य संसार की अनेकता के पार एक परम सत्य है। यही परमसत्य भौतिक संसार की अनेकता के मूल में। अर्थात बाह्य अनेकता भ्रामक है सत्य नहीं। इस सत्य को भारतवासियों ने जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू किया है। जिसका परिणाम यह हुआ कि उनका दृष्टिकोण उदार और सहिष्णु हो गया जिसकी आज विश्व को बहुत जरूरत है। भारत में बाहर से इस्लाम, यहूदी, पारसी और ईसाई धर्म समय-समय पर आए और फले- फूले। स्वयं भारत हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख इत्यादि कितने ही धर्मो की जन्म भूमि है। संभव है संसार का ऐसा कोई महत्वपूर्ण धर्म और संप्रदाय नहीं होगा जिसके अनुयायी भारत में न पाए जाते हैं। परंतु इतनी अधिक विविधता होते हुए भी भारत में सभी धर्मो के बीच सहिष्णुता और समन्वयशीलता दिखाई देती है जो आज के विश्व को एक नया मार्ग दिखाती है। नया संदेश देते हुए यह बताती है कि चाहे क्षेत्र और संस्कृति के आधार पर रूस-यूक्रेन विवाद हो या धर्म आधारित इजराइल-फिलिस्तीन विवाद इन सभी के मूल में सहिष्णुता और समन्वयशीलता ही ऐसी कड़ी है जो इन विवादों को समाप्त कर इन सबको एकता के सूत्र में बाँध सकती है।

भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता **अनेकता में एकता** आधुनिक संसार को यह सीख देती है कि विभिन्नताओं के होते हुए भी उनमें सामजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। भारत एक विशाल भौगोलिक इकाई वाला देश है जहां पर विभिन्न संस्कृति, भाषा, धर्म, जाति व संप्रदाय के लोग निवास करते हैं। लेकिन इन सभी को एक साथ लेते हुए वैश्विक मानचित्र पर एक अदभुत भारत का निर्माण भारतीय संस्कृति ने किया है जो आज के खंडित होते हुए विश्व को सिखाती है की विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई समस्याओं का समाधान अनेकता में एकता में निहित है। आज चाहे कोई धर्म कहीं प्रभावशाली हो या कहीं कोई भाषा प्रभावशाली हो या कहीं कोई नस्ल प्रभावशाली हो लेकिन उन सभी को अन्य धर्म,नस्ल, रंग इत्यादि के व्यक्तियों को साथ लेकर ही एक सुंदर विश्व का निर्माण किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति विश्व को एकता का पाठ पढ़ाते हुए आज की तमाम समस्याओं के समाधान का आह्वान करती है और विश्व को भी भारतीय संस्कृति से सीखते हुए अपनी समस्याओं के समाधान के प्रयास करने चाहिए।

भारतीय संस्कृति **सर्वे भवंति सुखिन सर्वे संतु निरामया** का संदेश देते हुए पूरे विश्व में सुख शांति एवं स्वस्थ जीवन की कामना करती है। वैश्विक परिदृश्य में फैली आज की तमाम समस्याओं के समाधान में सभी को स्वस्थ एवं सुखी रखना का संदेश देते हुए भारतीय संस्कृति आज की समस्याओं के समाधान के लिए कारगर सिद्ध होती। भारतीय संस्कृति सभी के लिए सुख व समृद्धि चाहती है। किसी को भी कष्ट न देते हुए दूसरों के कष्ट को दूर करते हुए तन मन और धन से सदा दूसरों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने का संदेश आज के विश्व को देती है। भारतीय संस्कृति का यह उपदेश रहा है कि मनुष्य को उन सुखों की उपेक्षा करने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए जिनकी प्राप्ति के लिए दूसरों का शोषण करना पड़े। भारतीय संस्कृति की यह भावना रही है कि वह अपना सर्वस्व त्याग कर भी दूसरों को सुखी बनाने का प्रयास करें। भारतीय संस्कृति के पुरोधाओं की धारणा थी कि "स्वार्थो यस्य पदार्थ एवं स नृणामग्रणी" अर्थात जिनका स्वार्थ ही परोपकार करने में है वे ही मानवता के नेता है। भारत का विश्वास "सर्वे सुखिन सन्तु" में रहा है। जो कुछ सत्य, शिव और सुंदर हो वह सबके लिए हो।

भारतीय संस्कृति में मानव की आदिभौतिक प्रगति के साथ-साथ उसके **आध्यात्मिक प्रगति** पर भी बल दिया गया है। भारतीय जीवन में आध्यात्मिक प्रगति और आनंद की विशेष प्रतिष्ठा हुई। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष या निर्वाण माना गया और इसके लिए अकिंचन एवं समृद्धिशाली राजा और रंक सभी प्रयत्नशील होते थे। अनेक वानप्रस्थ मुनि बन जाते थे और अंत में योग या समाधि मार्ग से या अन्य आध्यात्मिक मार्ग से मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करते थे। मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति, ज्ञान और तप विविध साधन बताए गए हैं। मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य दार्शनिक पद्धतियों पर चलते हुए ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करना या अन्य साधनों से सांसारिक जीवन से मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना माना गया। आज भी विश्व को भौतिक प्रगति के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति पर भी बल देने की आवश्यकता है। आज का विश्व भारतीय संस्कृति से सीखते हुए अपने आध्यात्मिक क्षेत्र को और उन्नत कर सकता है जो आज के मानव जीवन में सुख, समृद्धि, संतोष और सादगी लेकर आएगा जो सर उठाए खड़ी हुई बहुत सी मानवीय समस्याओं से निजात दिलाने में आज के वैश्विक मानव की सहायता करेगा।

भारतीय संस्कृति सत्य एवं अहिंसा की संस्कृति है जो वैश्विक स्तर पर सच की लड़ाई लड़ने व अहिंसा का मार्ग अपनाने पर बल देती है। आज के सभी वैश्विक मंच चाहे वह संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा हो या सुरक्षा परिषद या जी20 या फिर अन्य कोई वैश्विक मंच उन सभी मंचों से बात को सत्य तरीके से रखने का आवाहन करती है। अगर वैश्विक राष्ट्र भारतीय संस्कृति से सीखते हुए सही तथ्यों और बातों को एक मंच से साझा करने लग जाए तो आज के विश्व में फैली हुई आंतकवाद या अन्य किसी भी तरह की समस्याओं से छुटकारा आसानी से मिल सकता है। ठीक इसी तरह भारतीय संस्कृति अहिंसा का पाठ पढ़ती है। आज विश्व मे विभिन्न स्तर पर हिंसा का विकराल रूप देखा जा सकता है। विभिन्न आंतकवादी संगठन बने हुए हैं जो गाहे बगाहे अपनी हिंसक गतिविधियों से मानवीय चेतना को झकझोरने का काम कर रहे हैं। आई. एस.आई.एस, हमास, हौती, अलकायदा इत्यादि आंतकवादी संगठनों को अहिंसा का मार्ग अपनाने के लिए मजबूर किया जा सकता है। यह भारतीय संस्कृति ही है जो आज के विश्व को आशा की एक नई किरण दिखा सकती है जिसमें असत्य, झूठ, फ्रेब और हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं होगा।

भारतीय संस्कृति नारी का सम्मान करने वाले संस्कृति। भारतीय संस्कृति में **नारी सशक्तिकरण** को हमेशा बढ़ावा दिया है। आज के वैश्विक दौर में चाहे महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हो या शरीयत के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों को छीना जा रहा हो या महिलाओं को आगे बढ़ने से रोका जा रहा हो भारतीय संस्कृति हमेशा से ही महिलाओं

के साथ खड़ी है। स्त्री का माँ के रूप में सम्मान करते हुए उसे देवताओं से भी पहले का दर्जा दिया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में अगर वैदिक काल से देखा जाए तो ऋग्वेद में विश्ववारा, घोषा, अपाला, लोपामुद्रा सिकता इत्यादि महत्वपूर्ण विदुषी स्त्रियां थीं जिनको ऋषियों के समान पद प्राप्त था और जो मत्रों का उच्चारण करती थी। उत्तर वैदिक काल में भी गार्गी, मैत्री जैसी विदुषी महिलाएं थीं जिन्होंने याज्ञवल्क्य जैसे ऋषि के साथ शास्त्रार्थ किया था। आज के वैश्विक वातावरण में नारी सशक्तिकरण बहुत आवश्यक है। विश्व में नारी का मान सम्मान और मर्यादा बढ़ाने में भारतीय संस्कृति एक मार्गदर्शक के रूप में दिखाई देती है।

भारतीय संस्कृति **परमार्थ एवं परोपकार** की जननी है। सबका सहयोग व कल्याण भारतीय संस्कृति के मूल में है। जब भी विश्व में कहीं भी संकट की स्थिति पैदा हुई हो भारतीय संस्कृति ने उस संकट से निकालने में विश्व के सभी देशों की सहायता की है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय सेना ने विश्व में शांति स्थापित करने के लिए हमेशा बढ़-चढ़कर भाग लिया है। विश्व में प्राकृतिक आपदाओं से या मानवीय कर्यो से किसी भी तरह का संकट जब भी पैदा हुआ है भारतीय संस्कृति के पुरोधाओं ने उसे संकट से उभरने में विश्व को हमेशा सहायता दी है। 2020 में आए कोरोना जैसी महामारी से बचाव में सहायता हेतु भारत ने अपनी संस्कृति का अनुकरण करते हुए यूएई, इजराइल, ब्राजील, जर्मनी, नेपाल सहित कई देशों को कोरोना की दवा उपलब्ध करायी। भारत द्वारा दवा के रूप में सहायता उपलब्ध करवाकर अपनी परोपकार की संस्कृति की वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता को सिद्ध किया है। भारतीय संस्कृति कभी भी भौतिकवादिता की तरफ बढ़ाने के लिए प्रेरित नहीं करती है। यह प्रकृति और विश्व से उतना ही प्राप्त करने का संदेश देती है जो व्यक्ति के लिए अति आवश्यक हो। इसी को प्रतिबिंबित करते हुए कबीर जी अपने दोहे में रहते हैं की

"साँइ इतना दीजिए जा में कुटुंब समाय
मैं भी भूखा ना रहूं साधु न भूखा जाए"।

कोरोना काल के समय भी हमने देखा कि भारतीय संस्कृति ने अपने अभिवादन के तरीकों व योग एवं प्राणायाम के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई थी और अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध किया था। भारतीय संस्कृति के अभिवादन में **नमस्ते व प्रणाम** महत्वपूर्ण प्रतीक माने गए हैं। भारतीय संस्कृति दोनों हाथ जोड़कर अन्य व्यक्तियों के आत्म सम्मान को मान्यता प्रदान करती। कोरोना कल के नवीन परिदृश्य में जहां एक दूसरे से एक से दो मीटर की दूरी बनाए रखना व एक दूसरे को छूने से बचाना आवश्यक था वहां भारतीय संस्कृति की अभिवादन शैली दूर से हाथ जोड़कर सामने वाले व्यक्ति के सम्मान को मान्यता देते हुए नमस्ते करना खासी कारगर एवं प्रासंगिक सिद्ध हुई थी। **योग व प्राणायाम** भारतीय संस्कृति एवं जीवन शैली के प्राण है। यह भारत के ऋषियों- मुनियों की विश्व को एक अमूल्य देन है। योग दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामजस्य है विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य एवं भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करता है। प्रकृति से प्रेम करना व पशु पक्षियों एवं पेड़ों का सम्मान करना भी भारतीय संस्कृति की एक अनूठी विशेषता है। अगर वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति का अनुसरण किया जाए तो पशु पक्षियों व पेड़ों से होने वाली बीमारियों से निजात मिल सकती है वह विश्व को कोरोना जैसी महामारी का फिर से सामना करने से बचा जा सकता है।

CONCLUSIONS

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारत की सांस्कृतिक एकता एक सिद्धांत न होकर एक तथ्य थी और है। हमारे पूर्वजों ने इस तथ्य को समझा और देशभक्ति को एक प्रकार से धर्म का रूप दिया। पुराण और मनुस्मृति में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने वाले जो वचन मिलते हैं उनसे ज्ञान होता है कि उसमें भारत को केवल एक देश ही नहीं माना गया है वरन इसकी कल्पना भारतीय संस्कृति के मंदिर के रूप में की गई है। एक ऐसी संस्कृति जो पूरे विश्व को अपने परिवार के रूप में देखती है। जो वैश्विक स्तर पर अपनी एक अलग पहचान छोड़ती है। विश्व को एक नई राह दिखाती है और सभी को अपने में आत्मसात करने की प्रेरणा देती है। यही तो कारण है कि मिश्र, बेबीलोन, यूनान की संस्कृतियां आज वैश्विक पटेल पर दिखाई नहीं पड़ती है। तभी तो भारतीय संस्कृति के संबंध में कवी इकबाल ने कहा था कि -

"यूनान, मिश्र, रोम सब मिट गए जहां से
बाकी मगर है अब तक नामो निशा हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन, दौर ए जहां हमारा"।

REFERENCES

1. बी.एन. लूनिया- प्राचीन भारतीय संस्कृति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा 2020 पृष्ठ.15
2. शिवकुमार गुप्त - भारतीय संस्कृति के मूलाधार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2013,पृष्ठ 7
3. एस.एल. नागोरी- भारतीय संस्कृति का वृहत इतिहास, पोइंटर्स पब्लिशर्स, जयपुर, 1997पृष्ठ 5
4. रेणु मीणा, सुमन मक्कड़ - भारतीय संस्कृति चिंतन एवं विचारधारा, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2013,पृष्ठ 5
5. राधेश्याम शर्मा- साहित्य एवं संस्कृति चिंतन, बुक एनक्लेव, जयपुर, 2004,पृष्ठ 150
6. नंद भारद्वाज -संस्कृति:- जनसंचार और बाजार सामूहिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007,पृष्ठ 6
7. गोविंद चंद्र पांडे - वैदिक संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृष्ठ 15
8. गुलाब राय बाबू - भारतीय संस्कृति, रविंद्र प्रकाशन, ग्वालियर, 1975,पृष्ठ 7
9. बी एन.लुनिया- भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 1964 पृष्ठ16
10. दैनिक जागरण, राजस्थान पत्रिका,दैनिक भास्कर, द हिंदू समाचार पत्र